International Journal of Applied Research 2017; 3(2): 391-392

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2017; 3(2): 391-392
www.allresearchjournal.com
Received: 25-12-2016
Accepted: 27-01-2017

डॉ. कुलवन्त सिंह
सहायक प्रोफेसर हिन्दी विभाग,
एम.एम.पी.जी कालेज फतेहाबाद,
हरियाणा, भारत

Correspondence
डॉ. कुलवन्त सिंह
सहायक प्रोफेसर हिन्दी विभाग,
एम.एम.पी.जी कालेज फतेहाबाद,
हरियाणा, भारत

अमरकान्त की कहानियों में चित्रित सामाजिक समस्याएंः एक विश्लेषण

डॉ. कुलवन्त सिंह

प्रस्तावना

समय की गति प्रवाहमान होती है। समय की धारा का आवागमन निरन्तर चलता रहता है। जिससे कई महान आत्माएं पैदा होती हैं, कई समय रूपी काल के प्रवाह में लुप्त हो जाती है। इसी गतिशील समय की धारा में अपने जीवन व कार्य से अपनी अमिट छाप अंकित करने वालों में वरिष्ठतम नाम आता है अमरकान्त का। जिन्होने अपने अथक प्रयासों से हिन्दी साहित्य लेखन परम्परा में श्री वृद्धि करके हिन्दी साहित्य विशेषतः गद्य साहित्य को एक नई दिशा दशा प्रदान की है। स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद हिन्दी साहित्यकारों में प्रेमचन्द के यथार्थवादी दृष्टिकोण को जीवित रखने का श्रेय अमरकान्त को जाता है। साहित्य के क्षेत्र में अमरकान्त के अतुलनीय योगदान के लिए हिन्दी साहित्य हमेशा–हमेशा के लिए उनका ऋणी रहेगा।

अमरकान्त की कहानियों में चित्रित सामाजिक समस्याएंः अमरकान्त की कहानियों में हमें सामाजिक समस्याओं का यथार्थ वर्णन मिलता है। परिवार को समाज की धूरी माना जाता है। अमरकान्त की अनेकों कहानियों में परिवार से जुड़ी समस्याओं का वर्णन मिलता है। जिनका विस्तृत वर्णन इस प्रकार हैः–

दाम्पत्य जीवन की समस्याएंः अमरकांत की कहानियों का केन्द्रय बिन्दु निम्न मध्यवर्गीय समाज रहा है। अतः उनकी कहानियों में निम्न निर्धन वर्ग में पति–पत्नी, पिता–पुत्र, भाई–बहन, सास–बहू आदि के सबंधों के बीच दूरी तनाव, कड़वाहट आदि का यथार्थ वर्णन मिलता है। इनकी विकट परिस्थिति का प्रमुख कारण आर्थिक दरिद्रता है। आर्थिक अभाव सबंधों के बीच टकराव की संघर्ष पैदा करता है। 'निर्वासित' कहानी में गंगू के परिवार व पत्नी के बीच टकराव की स्थिति अकाल व आर्थिक विपन्नता बनती है। वह कहता है– ''उसी समय मुझे बुखार आने लगा था। दो महीने तक मैं इसी तरह चारपाई पर पड़ा रहा। मैं खाना पूरा न मिलने पर मेहरारू और बच्चों को गालियां देता। एक दिन शाम को मेहरारू बाबू लोगों के यहां से आई तो उसका हाथ खाली था। बच्चे भूख से बिलबिला रहे थे। मैं गुस्से से चिल्लाकर बोला–हरामजादी अपना तो वहां लुक–छिपकर गढडा भर आती है। यहां आकर बहाना बनाने लगती है। मेहरारू क्रोध से लाल होकर अपनी छाती पिटती हुई बोली–हां खाती हूं, खाती हूं। क्या कर लेगा, आज साफ सुन ले मैं तेरा गडढा नही भर सकती।''[1]
इसी प्रकार 'स्वामी' शीर्षक कहानी में पति–पत्नी के बीच संदेह से उत्पन्न दुष्परिणामों को उजागर किया गया है। इस कहानी में मनोहरलाल अपनी निलिमा के चरित्र पर संदेह करता है कि उसके नौकर हरिया से अनैतिक सबंध है। सन्देह के कारण अपने परिवार का विनाश कर डालता है। जैसे–''वह घर आने पर खोद–खोदकर पूछते हैं कि वह दिन भर क्या करती रही? कभी कभी वह अचानक कचहरी से लोट कर दोपहर को घर आते, सिर्फ यह देखने की निलिमा किसी के साथ हंस बोल तो नही रही है। देखते–ही–देखते वह घर एक चमन से कब्रिस्तान बन गया था।''[2]

विवाह पूर्व प्रेम सबंधों से उत्पन्न संघर्षः अमरकान्त की कहानी 'असमर्थ हिलता हाथ' में समाज में विवाह पूर्व प्रेम सबंधों से उत्पन्न भंयकर स्थिति का यथार्थ वर्णन मिलता है। इस कहानी की प्रमुख पात्र मीना अपने भाई के दोस्त दिलीप से प्रेम कर बैठती है। तो परिवार में तहलका मच जाता है। मीना का भाई चिल्लाता हुआ कहता है– ''मैने आईंदा तुमको कभी उसके साथ देखर लिया तो मार डालूंगा। मैं नही जानता था कि वह आस्तीन का सांप हैं।''[3] तथा दूसरी तरफ उसकी मां भी अपना आक्रोश प्रकट कर चीखती हुई कहती है–''हे भगवान! इसने हमारी इज्जत चौराहे पर फोड़ दी है। मैने पैदा होते ही इसका गला क्यों न घोंट दिया। अब इसका पढ़ना–लिखना बंद।''[4]

'हौंसला' शीर्षक कहानी की कमला पढ़ी लिखी समझदार लड़की है जो अपना जीवन साथी खुद चुनती है। वह अपने साथ नौकरी करने वाले राजेन्द्र से प्रेम करके शादी करना चाहती है। इस प्रेम विवाह को कमला की मां अनुमति दे देती है परन्तु उसके पिता हरनाथ कड़ा विरोध करते हुए कहते हैं– ''मैं जब तक जिन्दा हूं यह शादी नही हो सकती। मुझे समाज में रहना है कि नहीं?''[5]

बेगार की समस्याः कुहासा, जिन्दगी और जोंक, निर्वासित, दो चरित्र, नौकर आदि कहानियों में बेगारी की समस्या को चित्रित किया गया है। इन कहानियों में दर्शाया गया है कि किस प्रकार धनी वर्ग, उच्च वर्ग अपनी अहंवादी प्रवृति के कारण निम्न निर्धन वर्ग से जी तोड़ मेहनत करवाते हैं और बदले में पूरी बेगार भी नही देते। ये लोग निर्धन वर्ग के लोगों को अपनी दासी पूंजी समझ कर दिन रात शोषण करते हैं। 'कुहासा' कहानी का दूबर इसका मुख्य उदाहरण है। कहानी में एक सूटधारी दूबर से कहता है– ''बेटे, ये बर्तन साफ करने हैं, पहले ये जूठे पतल, कुल्हड़ कूड़े पर फैंक आओ, फिर भटिठयों की ईंटे उठाकर बाहर चबूतरे पर एक ओर रख दो। इसके बाद राख बटोरकर कूड़े पर फैंक आओ। यह सब कुछ करने के बाद सभी बर्तन चमाचम साफ करो और पानी गिराकर आंगन को शीशे की तरह चमका दो। बहुत हल्का काम है।''[6]

'दो चरित्र' शीर्षक कहानी भी बेगार की समस्या का सफल उदाहरण है। इस कहानी में जनार्दन के दोहरे चरित्र को उजागर किया गया है जो एक भीखमंगे लड़के से मजदूरी तय करके काम करवाकर भी मेहनतनामा नही देता। वह उससे काम करवाकर पुकारते हुए कहता है– ''इस कमरे को साफ कर दो। लड़का दौड़ कर बाहर गया और झाड़ू लाकर कमरा साफ करने लगा। जनार्दन कुछ देर वहीं खड़े रहे। फिर सहसा बिजली की तरह फूर्ती से लड़के के पास गए और उसे एक लात जमाते हुए मुंह बनाकर फुसफुसाहट भरी आवाज में बोले–भाग साले यहां से, चोट्टा कहीं का।''[7] 'जिन्दगी और जोंक' कहानी के रजुआ को तो उच्च वर्ग के लोग अपनी जागीर समझ कर हर तरह से उसका शोषण करते हैं और बदले में फूटी कोड़ी तक नही देते। कहानी में शिवनाथ बाबू के यहां काम पूरा करके जब रजुआ जमुनालाल के यहां पहुंचा तो जंगी ने पहला काम यह किया कि दो थप्पड़ उसके गाल पर जड़ दिए। फिर गरजकर कहा–''सुअर, धोखा देता है, अब आज मैं तुमसे दिन भर काम कराउंगा, देखे कौन साला रोकता है । आखिर हम भी मुहल्ले में रहते हैं कि नही।''[8]

बेरोजगारी की समस्याः स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद हमारे समाज में बेरोजगारी की समस्या कांग्रेस घास की तरह पूरे देश में फैल गई है। जिसका दंश निम्न मध्यम वर्ग के पढे लिखे नौजवानों को झेलना पड़ रहा है। अमरकांत की घर और इंटरव्यू शीर्षक कहानियां इस समस्या को उजागर करती है। 'घर' शीर्षक कहानी में एक बेरोजगार युवक का चित्रण इस प्रकार हुआ है– ''वह एक दुबला, पतला, लम्बा और सांवला–सा नौजवान था, जो एम.ए. पास करके दो वर्ष से बेरोजगारी की समस्या से ग्रस्त है.....एम. ए. करने व टाईप सीखने के बाद भी उसे काम नही मिलता तो वह आहत होकर रोजगार के दफतर को बेकारी का दफतर कहने लगा।''[9]

इसी प्रकार 'इन्टरव्यू' शीर्षक कहानी में नवयुवकों की मानसिकता तथा उम्मीदवारों की चयन प्रक्रिया का यथार्थ वर्णन इस प्रकार किया है– ''मोटे तौर पर वहां तीन श्रेणियों के नवयुवक उपस्थित थे। पहली श्रेणी में ऐसे लोग थे, जिनकी योग्यता अधिक से अधिक इंटरमीडियट तक की थी। दूसरी श्रेणी में खोटे सिक्कों की तरह बेचलतू वकील, होमियोपेथी डाक्टर, वैध तथा हकीम थे। तीसरी श्रेणी में कुछ ऐसे खानदानी विद्यार्थी थे, जिनकी आर्थिक स्थिति तेजी से बिगड़ रही थी और उनके घरवालों ने उन्हे यहां जबरदस्ती भेजा था।

इनके इलावा डिप्टी कलेक्टरी, दोपहर का भोजन, मकान, छिपकली, जन्मकुंडली, हौंसला आदि ऐसी अनेकों कहानियां है जिनमें सामाजिक समस्याओं का ताना बाना बुना गया है।

उपसहांरः निसन्देह अमरकान्त जीवन के धरातल से जुड़े हुए साहित्यकार हैं। उन्होने निम्न मध्यवर्गीय समाज की जीवन्त समस्याओं को देखा, परखा व स्वंय भोगा है। इसीलिए उनकी कहानियों में हमें आत्मीयता झलकती है। उनकी कहानियों में हमें एक ऐसे समाज की यथार्थ झांकी मिलती है जिन्हे प्रायः अन्य साहित्यकारों ने अनदेखा कर दिया है। अतः अमरकान्त की समस्त कहानियां सामाजिक सरोकार की कहानियां हैं, सामाजिक समस्याओं की कहानियां हैं, सामाजिक चेतना की कहानियां है जो तत्कालीन समाज का यथार्थ चित्र प्रस्तुत करती हैं।

सन्दर्भ सूची

1. अमरकान्त की सम्पूर्ण कहानियां, खण्ड 1 पृ. 336
2. अमरकान्त की सम्पूर्ण कहानियां, खण्ड 1 पृ. 303
3. अमरकान्त की सम्पूर्ण कहानियां, खण्ड 2 पृ. 06
4. अमरकान्त की सम्पूर्ण कहानियां, खण्ड 2 पृ. 06
5. अमरकान्त की सम्पूर्ण कहानियां, खण्ड 2 पृ. 307
6. अमरकान्त की सम्पूर्ण कहानियां, खण्ड 2 पृ. 152
7. अमरकान्त की सम्पूर्ण कहानियां, खण्ड 1 पृ. 96
8. अमरकान्त की सम्पूर्ण कहानियां, खण्ड 1 पृ. 57
9. अमरकान्त की सम्पूर्ण कहानियां, खण्ड 2 पृ. 136
10. अमरकान्त की सम्पूर्ण कहानियां, खण्ड 1 पृ. 06